D-III

Short Notes on Raga Jaijaivanti

* इस राग की उत्पत्ति खमाज थाट से मानी गई है।
* इसमें दोनों गंधार और दोनों निषाद का प्रयोग होता है।
* जाति सम्पूर्ण - सम्पूर्ण है।
* वादी स्वर ऋषभ और संवादी पंचम है।
* रात्रि के दूसरे प्रहर के अंतिम भाग में इसे गाया बजाया जाता है।
* आरोह- सा, ध॒ नि॒ रे, रे ग॑ म प॑, नि सां
  अवरोह- सां नि॒ ध प, ध ग॑ म रे ग॒ रे सा
* यह क्रमशः दो अंगों में गाया जाता है।
* इस राग की प्रकृति गंभीर है।
* इसका चलन तीनों सप्तकों में समान है।
* इसमें प॒ रे की संगति प्रचुरता से होती है।
* इसे परमेल प्रवेशक राग कहा गया है।
* इसमें बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल, ध्रुपद, धमार सभी शोभा देते हैं।